श्री राम्

आपदा मप हर्तारं
दातारं सर्व सम्पदाम्
लोकाभि रामं श्री रामं
भूयो भूयो नमाम्यहम् १

आर्ताना मार्ति हन्तारं
भीतानाम् भीति नाशनम्
द्विषताम् काल दन्डं तं
राम चन्द्रं नमाम्यहम् २

संनद् धः कवची खड्गी
चाप वाण धरो युवा
गच्छन् ममा ग्रतो नित्यं
रामः पातु सलक्ष्मणः ३

नमः कोदन्ड हस्ताय
सन्धी कृत शराय च
खन्डिता खिल दैताय
रामाय पन्नि वारिणे ४

रामाय राम भद्राय
राम चन्द्राय वेधसे
रघु नाथाय नाथाय
सीतायाः पतये नमः ५

अगृतः पृश्ठ तःश्चैव
पार्श्व तश्च महा वलौ
आकर्ण पूर्ण धन्वानौ
रक्षेतां राम लक्ष्मणौ
रक्षेतां राम लक्ष्मणौ ६

श्री रामचन्द्र कृपालु

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन
हरण भव भय दारुणम्
नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख कर
कञ्ज पद कञ्जरुणम्

कंदर्प अगणित अमित छबि
नव नील नीरज सुन्दरम्
पट पीत पानहुँ तड़ित रुचि सुचि
नौमि जनक सुतावरम्

भजु दीन बन्धु दिनेश दानव
दैत्य वंश निकन्दनम्
रघु नन्द आनंद कंद कोशल
चन्द दशरथ नन्दनम्

सिर क्रीट कुण्डल तिलक चारु
उदार अङ्ग विभूषणम्
आजानु भुज सर चाप धर
सङ्ग्राम जित खर दूषणम्

इति वदति तुलसी दास शङ्कर
शेष मुनि मन रञ्जनम्
मम हृदय कञ्ज निवास कुरु
कामादि खल दल मञ्जनम्

वैश्णव् जन् तो

वैश्णससव् जन् तो तेने कहिये जे
पीड् परायी जाणे रे
प-दुर्ख्खे उपकार् करे तोये
मन् अभिमान् ना आणे रे

सकळ् लोक् मान् सहुने वन्दे
नीन्दा न करे केनी रे
वाच् काछ् मन् निश्चळ् राखे
धन-धन् जननी तेनी रे

सम-द्रिष्टी ने तृष्णा त्यागी
प-स्त्रीं जेने मात् रे
जिह्वा थकी असत्य ना बोले
प-र्धन् नव् झाली हाथ् रे

मोह्-माया व्यापे नही जेने
द्रिढ् वैराग्य जेना मन् मान् रे
राम् नाम् सुन् ताळी लागी
सकळ् तिरथ् तेना तन् मान् रे

वण-लोभी ने कपट्-रहित् छे
काम-क्रोध् निवार्या रे
भणे नरसैय्यो तेनुन् दर्शन् कर्ता
कुळ् एको तेर् तारया रे